~~निमि~~

निर्मक्षिकम् -

Name :- Soni Kumari
class :- B.A III year
Deptt :- Sanskrit

लौकिक विग्रह :- मक्षिकाणाम् अभाव

अलौकिक विग्रह :- मक्षिका आम् निर्

ऐसा विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति -०' से अभाव अर्थ में प्रयुक्त 'निर्' अव्यय का 'मक्षिका' शब्द के साथ समास होने पर "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा के बाद 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुप (आम्) का लोप हो रुप बना —

मक्षिका निर्

इस स्थिति में 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से निर् की उपसर्जन संज्ञा होने पर पुनः 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसके पूर्व प्रयोग हो रुप बना। ——

निर्मक्षिका

इस स्थिति में 'अव्ययीभावश्च' से इसका नपुंसकत्व होने पर 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' से अन्त्य 'आ' का ह्रस्व (अ) होने पर ~~निर्मक्षिक~~ रुप बना —

निर्मक्षिक

इस ~~स्थिति~~ में पुनः निर्मक्षिक का प्रातिपदिक संज्ञा 'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से होने पर 'स्वौजसमौट् -०' से 'सु' का आगम होने के बाद 'अव्ययादाप्सुपः' से सु लोप होने पर 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' से 'सु' के लोप को बाधकर 'सु' का 'अम्' आदेश हो पुनः 'अमि पूर्वः' से पूर्व रुप होकर निर्मक्षिकम् रुप सिद्ध हुआ।

समास

यथाशक्ति

लौ० वि० — शक्तिम् अनतिक्रम्य

अलौ० वि० — शक्ति अम् यथा

इस विग्रह के पश्चात 'अव्ययं विभक्ति-०' से यथा के पदार्थानतिवृत्ति अर्थ में विद्यमान 'यथा' अव्यय का शक्ति शब्द के साथ समास होने पर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा के बाद 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से 'सुप्' (अम्) लोप हो रूप बना —

शक्ति यथा

इस स्थिति में प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से यथा' की उपसर्जन संज्ञा होने पर 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व प्रयोग हो रूप बना —

यथाशक्ति

इस स्थिति में पुनः कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा हो तथा 'एकदेशविकृतमनन्यवत्' से न्याय होने पर 'स्वौजसमौट०' से सु विभक्ति का आगम होने के बाद 'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा होने के फलस्वरूप 'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' का लोप होने पर यथाशक्ति रूप सिद्ध होगा।

समास

पञ्चगङ्गम्

Name ! - Sawi kumari
class :- B.A III year
Deptt ! - Sanskrit

लौकिक विग्रह — पञ्चानाँ गङ्गानाँ समाहारः
अलौकिक विग्रह : - पञ्चन् आम् गङ्गा आम्

ऐसा विग्रह होने पर 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' से समाहार अर्थ में संख्यावाचक 'पञ्चन् शब्द का 'गङ्गा' शब्द के साथ द्विगु समास प्राप्त था परन्तु 'नदीभिश्च' सूत्र उसे बाध कर अव्ययीभाव समास होने पर कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा होने के फलस्वरूप 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः से सुप (दोनो आम्) का लोप है रूप बना —— पञ्चन् गङ्गा

इस स्थिति में 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से पञ्चन् की उपसर्जन संज्ञा होने के फलस्वरूप 'उपसर्जनं पूर्वम् से उसका प्रयोग होने पर 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य से 'पञ्चन्' के 'न्' का लोप होने पर 'अव्ययीभावश्च' से नपुंसक संज्ञा होने के फलस्वरूप 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य से 'गङ्गा' के आ का ह्रस्व (अ) होने पर 'पञ्चगङ्ग' शब्द की पुनः प्रातिपदिक संज्ञा 'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से होने पर 'स्वौजसमौट' से सु' विभक्ति आने पर 'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा होने के फलस्वरूप अव्ययादाप्सुपः से सु' का लोप प्राप्त था, किन्तु नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' से इसे बाधकर अमादेश करने पर 'अमि पूर्वः से पूर्व रूप होकर रूप बना —

पञ्चगङ्गम्

रूप सिद्ध हुआ।

उपशरदम्

लौ० वि० — शरदः समीपम्
अलौ० वि० — शरद् ङस् उप

ऐसा विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति—०' से सामीप्य अर्थ में विद्यमान 'उप' अव्यय का 'शरद' शब्द के साथ समास होने पर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा होनेके बाद 'सुपोधातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (ङस्) का लोप होने पर रूप बना —

शरद् उप

इस स्थिति में 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'उप' की उपसर्जन संज्ञा होने के फलस्वरूप 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व प्रयोग होने पर रूप बना —

उपशरद्

इस स्थिति में 'अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः' से टच् (अ) आने पर 'उपशरद् अ = उपशरद बना। इस स्थिति में पुनः 'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा होने पर 'स्वौजसमौट्' से सु आने पर 'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा होने पर 'अव्ययादाप्सुपः' से प्राप्त सु के लोप को 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' से बाधकर 'अम्' आदेश करने पर पुनः 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर रूप सिद्ध बना — उपशरदम् ॥